

समय की कीमत

बहुत समय पहले की बात है — एक छोटे से गाँव में एक ज़मींदार रहता था। वह दिन-रात मेहनत करता था, खेतों पर, व्यापार में — और उसकी मेहनत रंग लाई। उसने खूब धन-सम्पत्ति जुटा ली। परिवार वाले और नौकरादार — सभी कहते थे कि ज़िंदगी ठीक-ठाक है, अब आराम कर लो। लेकिन ज़मींदार ने सोचा — “थोड़ा और करना चाहिए, अभी समय है, मैं बहुत कुछ हासिल कर सकता हूँ।” वह दिन-रात दौड़ता रहा, केवल धन कमाने में लगा रहा। उसने अपने बच्चों, परिवार, दोस्तों — सबके साथ समय बिताना बंद कर दिया। खुशी, हंसी, मिलना-जुलना, सब कुछ पीछे छूट गया। एक दिन जब वह बूढ़ा हुआ, उसकी सेहत खराब हुई — उसे महसूस हुआ कि उसका पास धन तो बहुत था, लेकिन खुशियाँ, रिश्ते, समय — कुछ भी उसके साथ नहीं था। वह सोचने लगा कि जिन पलों को उसने व्यर्थ समझकर दफना दिया — वे पलों कीमती थे। अब उन्हें वापस न तो पैसा ला सकता था, न स्वास्थ्य, न रिश्तों की गर्माहट।

अंत में, जब मृत्यु का निमंत्रण आया, उसने अपने धन को देखकर किसी लाभ की उम्मीद की — लेकिन वो अब उसे कुछ काम न आया। धन से समय नहीं खरीदा जा सकता था।

यही था उस ज़मींदार की सीख —

“समय अनमोल है। जो समय बीत जाता है, वह कभी वापस नहीं आता। धन, दौलत, सब मिल सकते हैं — लेकिन वह समय, वह पल जो बीत गया — फिर लौट कर नहीं आता। इसलिए हर काम, हर रिश्ते, हर अवसर — समय रहते निभाइए, क्योंकि समय हमारा सबसे कीमती संसाधन है।”